सं.ग्रो.वि./एफ.डी./137-85/28930.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं. ए. एस. के. बरिंग पौलिशिंग, 16/6, मथुरा रोड़, फ़रीदाबाद के श्रमिक श्री फूल सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फ़रवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फ़रीदाबाद को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:--

वया श्री फूल हिं की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

िनांदा 23 जुलाई, 1985

सं. ग्रो.वि./एफ.डी/115-85/30803.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. जितेन्द्रा कास्टिंग एण्ड इन्जि. वर्कत, प्लाट नं ० 205, सैक्टर-24, एन.ग्राई.टी., फरादाबाद के श्रीमिक श्री दीन चन्द्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20, जून 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रधिसूचना सं० 11495-जा-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उसने सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री दीप चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं .श्रो.वि./एफ.डी./120-85/30810.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. जितेन्द्रा का स्टिंग एण्ड इन्जि. वर्कस, 205/24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री धजीत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमे इस के बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यार्यनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, श्रीद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फ़रीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है था विवाद से सुसंगत भाषवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री श्रजीत सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं. भ्रो. वि./एफ.डी./119-85/30817.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. जितेन्द्रा का स्टिंग एण्ड इन्जि. वर्कस, 205/24, फरीदावाद, के श्रमिक श्री रमेश पाल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामला में कोई भी खोगिक विवाद है;

भौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मन भौद्योगिक विवाद मिश्वनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करत हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी भिश्वभूषना सं. 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये मिश्वभूवना सं. 11495-श्री-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त मिश्विमयम की खारा 7 के भ्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त भवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रमेश पाल की सेवाम्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं ग्रो.वि./एफ.डी./113-85/30825.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. जितेन्द्रों कास्टिंग एण्ड इन्जि. वर्कस प्लाट नं. 205, सैक्टर→24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री विजय कुमार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामलें में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये, हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495—जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धक तथा श्रमिक के बीच या तो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री विजय कुमार की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

दिनांक 30 जुलाई, 1985

सं. ग्रो.वि./रोहतक/115-85/32057.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं श्री मस्तनाथ ग्रार्युर्वेदि महा विद्यालय ग्रस्थल बोहर (रोहतक) के श्रीमक श्री प्रेम प्रकाश दिह्या तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चंिक हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, न्यब, भौद्योगिक विवाद मधिनियम, 1947 की बारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी मधिसूचना सं. 9641-1-श्रम/78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी मधिसूचना धारा 7 के मधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणय हेंतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है :—

नया श्री प्रेम प्रकाश दहिया की सेवाग्री का समापन न्यायोचित तथा टीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० म्रो०वि०/पानी/73-85/32078.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० जनता भी हास्पीटल पानीपत, के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह तथा उस के प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई मौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 3-(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984, द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?